

पाठ - 1
कन्यादान

प्रश्न / उत्तर :-

प्र-1: आपके विचार से माँ ने ऐसा क्यों कहा कि लड़की होने पर लड़की जैसी मत दिखाई देना ?

उ- माँ ने ऐसा इसलिए कहा है कि क्योंकि वह लड़कियों पर हो रहे शोषण से उसे बचाना चाहती है। लड़की को दुर्बलता और कोमलता का पर्याय समझा जाता है। कोमलता और शालीनता लड़कियों के गुण होते हैं। जिसे माँ बनाकर रखने को कहती है। परंतु साथ ही कहती है कि इतना कमजोर मत बनना कि लोगों का अत्याचार सहन करो क्योंकि कमजोर लड़कियों का शोषण किया जाता है। वह उसे परिस्थितियों का सामना करने के लिए तैयार करना चाहती है।

प्र-2: 'आग, रौटियाँ सेकने के लिए हैं। जलने के लिए नहीं।'

(क) इन पंक्तियों में समाज में स्त्री की किस स्थिति की ओर संकेत किया गया है ?

उ- इन पंक्तियों में समाज द्वारा नारियों पर किए गए अत्याचारों की ओर संकेत किया गया है। वह ससुराल में घर-गृहस्थी का काम संभालती है। सबके लिए भोजन पकाती है फिर भी उसे अत्याचार सहना पड़ता है। उसे अग्नि में जला दिया जाता है। नारी का जीवन संघर्षों से भरा होता है।

प्र-2) माँ ने बेटी को सचेत करना क्यों जरूरी समझा?
 उ०:- बेटी अभी सयानी नहीं थी। उसकी उम्र भी कम थी। वह समाज में व्याप्त बुराइयों से अनजान थी। माँ यह नहीं चाहती थी कि उसने जो अन्याय सहे हैं वह सब उसकी बेटी को भी सहने पड़े। इसीलिए माँ ने बेटी को सचेत करना उचित समझा।

प्र-3) पाठिका थी वह धूँधले प्रकाश की, कुछ तूकों और कुछ लयबद्ध पंक्तियों की इन पंक्तियों को पढ़कर लड़की की जो छवि आपके सामने उभर कर आ रही है उसे शब्दबद्ध कीजिए।

उ०:- लड़की बहुत भौली-भौली है। माता-पिता के साथ रहकर उसने कभी दुखों का सामना नहीं किया है। समाज में जो भी हो रहा है, उन घटनाओं से वह अनजान है। उसे लगता है कि उसका आने वाला जीवन भी सुखद सपना ही होगा। आने वाली बाधाओं का उसे ज्ञान नहीं है।

प्र-4) माँ को अपनी बेटी अंतिम पूँजी क्यों लग रही थी?

उ०:- माँ को अपनी बेटी 'अंतिम पूँजी' इसीलिए लग रही थी क्योंकि वह अपने सारे सुख-दुःख अपनी बेटी के साथ बाँटती थी। उसने बेटी को पूँजी की तरह सुहेज कर पाला-पोसा था। विवाह के उपरांत उसकी यह पूँजी भी जाने वाली थी।

प्र-5) माँ ने बेटी को क्या-क्या सीख दी?

उ०:- माँ ने अपनी बेटी को विदा करते समय निम्नलिखित सीख दी:-

- अपनी सुंदरता पर गर्व न करना और प्रशंसा पर न रीझना।

- भौली और कमजोर मत दिखना।
- वस्त्र और आभूषणों के आकर्षण से दूर रहना।
- आग जलने के लिए हैं खुद को जलाने के लिए नहीं।
- अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाना और उन से दुःखी होकर आत्महत्या मत करना।

प्र-6 आपकी दृष्टि में कन्या के साथ दान की बात करना कहाँ तक उचित है?

ऊ- कन्या के लिए दान शब्द का प्रयोग अनुचित है। दान वस्तुओं का होता है व्यक्तियों का नहीं। दान की हुई वस्तुएं वापस नहीं ली जाती परंतु आज की स्थिति में बेटी के साथ माता-पिता का अनन्य संबंध होता है। शादी के बाद भी उसका जुड़ाव अपने मायके से बना रहता है। इसलिये कन्या के साथ दान शब्द अनुचित है।

प्र-7 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को जो सीख दी है क्या वह आज के युग के अनुकूल है?

ऊ- माँ ने बेटी को जो सीख दी है कि अपनी सुंदरता पर गर्व न करना और प्रशंसा पर न रीझना, भौली और कमजोर मत दिखना आदि। यह सीख आज के युग के सर्वथा अनुकूल है। आज लड़की को जीवन की वास्तविकता पहचान कर उसमें संघर्ष करने की सीख देना सर्वथा उचित है।